चन्द्रमणि महास्थवीर का जीवन परिचय

लेखक —

भिक्षु ज्ञानेश्वर जी

प्रकाशक :—

भिक्षु ज्ञानेश्वर मंत्री

कुशीनगर भिक्षु संघ

कुशीनगर (देवरिया)

मुद्रक :—

प्रताप प्रिंटिंग प्रेस

कसया (देवरिया)

प्रकाशन तिथि ··· ···· ··· ···

पूजनीय भिक्षु चन्द्रमणि महास्थवीर

भिक्षु ज्ञानेश्वर, मन्त्री, कुशीनगर भिक्षुसंघ
कुशीनगर, देवरिया।

१— जन्म :— भारत और नेपाल में बौध धर्म के पुनरूद्धारक और स्वर्गीय बोधिसत्व डा० भीम राव अम्बेडकर के अध्यात्मिक दीक्षा धर्म गुरु श्री चन्द्रमणि जी का जन्म सन् १८७६ ई० के ज्येष्ठ वदी के ६ दिन मंगलबार को बर्मा के अराकान प्रदेश के अक्याब जिले के ओहाऊ तहसील के पौ-पङ्-ग्वाङ्- नामक गांव में हुआ था। यह गांव रच्छौ नदी के पावन तट पर बसा है। प्रसिद्ध महामुनि तीर्थ के पूर्व-दक्षिण ८ मील के दूरी पर स्थित है।

२— बचपन का नाम :— माता-पिता बचपन में इनका नाम साबाँऊ रखा था। 'ऊ' शब्द बर्मा के आराकान प्रान्त में सर्व प्रथम पुत्र और पुत्री के नाम में रखा जाता है।

३— माता पिता :— इनके पिता का नाम ऊ चोमौ था और मां का नाम अवां ये था। आपके माता-पिता उस गांव के प्रतिष्ठित दयावान एवं दान शील स्वाभाव के थे। माता-पिता के स्वभाव और आचरण का प्रभाव बालक साबाँऊ पर भी पड़ा। फल स्वरूप एक दिन वही बालक विश्व विख्यात महास्थवीर चन्द्रमणि के रुप में विकसित हुआ और उस कुल

को सुख की वृद्धि होता गया।

४– बचपन :– आप अपने माता-पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। आप बाल काल से ही चिन्तन शील स्वभाव के थे। संसार के दुःखी प्राणियों को देखकर प्रायः आप की चिन्ता और बढ़ जाती है।

दुल्लभो पुरिसा जञ्ञो न सो सब्बत्थ जायति।

यत्थ सो जायती धीरो तं कुलं सुख मेधति ॥ (धम्मपद)

जेष्ठ पुरुष काजन्म दुर्लभ है; वह सब जगह पैदा नहीं होता। जिस कुल में वह धीर पैदा होता है, उस कुल में सुख की वृद्धि होती हैं।

५– प्रारम्भिक शिक्षा :– सन् १८८३ ई० में जब आप की आयु ७ वर्ष की हो गयी तभी आप रुपच्छौ नामक गांव के "चौङ" बिहार में शिक्षार्थ चले गये वहां प्रधान महास्थवीर के पास रहकर कुछ ही वर्षों में वर्णमाला परित्त पाठ और कच्चायन व्याकरण आदि में पारगत हो गये। इनके सेवा भाव एवं स्वभाव से आचार्य की असीम कृपा रहती थी।

६– गृह त्याग :– १८८६ ई० में १० वर्ष की आयु में माता-पिता एक छोटी बहिन और एक भाई को छोड़ कर गृह त्याग कर ऊ चन्दिमा नामक अपने चाचा भिक्षु के साथ चित्वे म्रो (अक्याब) चले गये। यहाँ श्रामणेर की शिक्षा सीखते एवं पालन करते हुए अपने गम्भीर अध्ययन-मनन में लगे रहें।

७– **प्रव्रज्या :–** गृह त्याग के दो वर्ष बाद ही आप प्रव्रजित होने के लिए बेचैन हो गये। अन्त में भिक्षु ऊ चन्दिमा से प्रार्थना करते हुए ये कहे, "भन्ते ! इन काषाटा वस्त्रो को देकर संसार दुखो से मुक्ति होने के लिए तथा निर्वाण का साक्षात्कार करने के लिए शीघ्र प्रव्रजित करने की कृपा करे।" भिक्षु ऊ चन्दिमा ने सन् १८८८ ई० में श्रामणेर दीक्षा देकर प्रव्रजित कर दिया।

८– **नाम परिवर्तन :–** श्रमण दीक्षा के उपरान्त आपका गृहस्थ नाम बदल कर श्रामणेर नाम "चन्दा" रखा गया। बाद में भिक्षु होने पर ऊ चन्द्रमणि के नाम से संसार जानने लगा।

९– **भारत आगमन :–** भारत में धर्म प्रचारार्थ एक योग्य बर्मी भिक्षु खोजते हुए महाबोधि सभाके संस्थापक अनागारिक धर्मपाल और थियोसोफिकल सोसाइटी के अध्यक्ष श्री आँल-कट बर्मा गये और वहां भिक्षु ऊ चन्दिमा से एक योग्य धर्म-प्रचारक को भारत ले आने के लिए प्रार्थना किया। भिक्षु ऊ चन्दिमा ने श्रामणेर चन्दा को उनके साथी श्रामणेर सूरिय और बालक सदोऊ 'कत्पिय कारक' के साथ सन् १८९१ ई० में भारत भेज दिया। तब से लेकर सन् १९७२ ई० तक चन्द्रमा के शक्ति एवं मनोरम प्रकाश की तरह भारत और नेपाल को प्रकाशित करते रहें।

१०– सर्वप्रथम बुद्ध गया में निवास —: बर्मा से भारत आने पर कलकत्ता से सीधे बौद्ध गया आ गये। इस सम्य बुद्ध गया में बर्मी राजा तीबो द्वारा निर्मित एक बौद्ध बिहार था। उस में सिहल देश वासी भिक्षु चन्द्रज्योति महास्थवीर रहते थे। आप लोग भी उसी विहार में रहकर बोधि वृक्ष की सेवा और भगवान बुद्ध की मूर्ती पर पूजा करने में संलग्न हो गये।

११– बुद्ध गया में अप्रिय घटना :– उस समय बुद्ध गया में एक अन्य धर्मावलम्बी महन्थ का बुद्धगया मन्दिर और वोधि-वृक्षपर कब्जा था। वह महन्थ बौद्ध भिक्षुओं को वहाँ देखना नहीं चाहता था। बौध भिक्षुओं का सम्पूर्ण बिनाश करने की इच्छा से एक दिन रात में बौद्ध विहार में डकैती डलवा दिया। डाकू बौद्ध भिक्षुओं को काफी मार-पीट दिये।

१२– कलकत्ता में भारतीय भाषाओं का अध्ययन :— बुद्ध गया डकैती काण्ड के बाद आप यहाँ से कलकत्ता चले गये और कलकत्ता में ही रहकर आधुनिक और प्राच्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया और कुछ ही दिनों में अपने उददेश्य में पूर्णता प्राप्नकर लिया।

१३– पुन: बर्मा वापस :– बुद्ध गया के डकैती से मन में अत्याधिक कष्ट हो जाने के बाद कलकत्ता में कुछ दिन रहे और उस अत्याचार से असतुष्ट होकर आप सन्१८९२ में बर्मा देश को वापस चले गये।

१४– बर्मा में आलोचना के पात्र :— भारत से बिना उदेश्य

पूर्ण किये लौट जाने पर जिन अखबारों ने भारत प्रस्थान के समय प्रसंशा छापे थे वे ही अखवार इस बार आलोचना एवं निन्दा छापे। इससे आपको एक नई प्रेरणा मिली और पुनः भारत आने का विचार बीज मन में पनपने लगा।

१५– पुनः भारत आगमन — भारत से वापस आने पर बर्मा में बहुत दिन तक नहीं रहे। पुनः कुछ महिने के भीतर ही में भारत आने की तैयारी करने लगे। गुरुजी का आज्ञा प्राप्त हो गयी। मार्ग व्यय एकत्र कर लिए और भारत की ओर सन्१८९३ई० में प्रस्थान कर दिये। कुछ ही दिनों में कलकत्ता पहुँच आये। यहाँ एक धर्मशाला में रहे थे और भिक्षाटन कर खाते तथा अध्ययन करते थे।

१६- भदन्त महावीर महास्थवीर से भेंट — कलकत्ता मे आकर एक बर्मी उपासक के घर में भिक्षाटन करते समय महावीर महास्थवीर से सन् १८९५ ई० में मिले, मिलते ही भिक्षु महावीर इनका प्रेमपूर्वक अपने पास रहने और पढ़ने का व्यवस्था की।

१७— प्राचीन एवं प्रादेशिक भारतीय भाषाओं का अध्ययन — पूजनीय भिक्षु महावीर महास्थवीर के संरक्षण में रहकर संस्कृत; पालि, बंगला; हिन्दी इत्यादि भाषाओं का अध्ययन प्रारम्भ कर दिये। शिघ्र ही संस्कृत व्याकरण के साथ—साथ उपरोक्त भाषाओं में पारङ्गत हो गये। कल-

कत्ता में ये श्री जीवानन्द विद्यासागर और श्रीगोविन्द शास्त्री इत्यादि विद्वानों से भारतीय भाषाओं को सीखे।

१८ – संस्कृत साहित्य और व्याकरण का अध्ययन :—

इसके बाद इनको संस्कृत भाषा का अध्ययन गुरु कुल विधि से करने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसी बीच भिक्षु महावीर महा-स्थवीर गाजीपुर जिला के गहमर नामक ग्राम में गये। वहाँ प्राचीन पदति का एक संस्कृत पाठशाला था। उसके आचार्य पं० जनकी राम थे। भिक्षु महावीर ने पं० जनकी राम से इनके संस्कृत अध्ययन की अभिलाषा और रूची के बारे में बताया। पं० जनकी राम सहर्ष स्वीकार कर लिए। उसी गाँव के पं० लखू चौवे और रघू चौबे के घर रहने और खाने की व्यवस्था हो गयी। यह सूचना पाकर श्रामणेर चन्दा कलकत्ता से गार्जीपुर के गहमर गाँव में आकर अध्ययन प्रारम्भ कर दिये। आप लघु सिद्धान्त कौमुदी, सिद्धान्त कौमुदी एवं अनेक काव्य ग्रन्थों तथा कोष का अध्ययन मनन किया। उस समय इनके मुख्य दायक खिजारी बाबू ही थे। इसी बीच इनके गुरु पं० जनकी राम की मृत्यु हो गयी।

१९— आयुर्वेद एवं ज्योतिष विद्या का अध्ययन —

वे भारत के कोने कोने में घूम—घूम कर आयुर्वेद और ज्योतिष के विद्वानो का पता लगा—लगा कर इन के सम्पर्क में रहकर वे इन विद्वानों से कुछ ही दिनों में पारङ्गत हो

गये। जिसका लाभ कुशीनगर में रहते समय यहां की जनता ने खूब उठाया।

२०— कुशीनगर में प्रथम बौद्ध विहार की स्थापना —

आप गाजीपुर के गहमर ग्राम से प्राप्त होते समय सन १८९८ ई० में कुशीनगर आ गये। उस समय भिक्षु महावीर महास्थवीर कुशीनगर में महा परिनिर्वाण धर्मशाला और विहार के निर्माण कार्य में लगे थे। चन्दा श्रामणेर भी उनकी सहायता में लग गये। उनका दायक सेठ खिजारी बाबू ने आर्थिक महायता दी और यह धर्मशाला सन १९०२ ई० में बनकर तैयार हो गया।

२१- पालि त्रिपिटक साहित्य के अध्यानार्थ पुनः बर्मा प्रस्थान—

प्रस्थान— कुछ दिन कुशीनगर में रहने के बाद पुनः सन् १८९९ ई० में पालि साहित्य के अध्ययन के लिए बर्मा देश चले गये। बर्मा में सर्व प्रथम मौलमीन नगर के मेयर के घर एक सप्ताह तक रहना पड़ा उसके बाद वहां से थोड़ी दूर पर स्थित "कदो कोन्हा" नामक कस्बे में चले गये और वहाँ के विहार में रहने लगे। वहाँ महास्थवीर आचार्य ऊ सागर के पास रहकर पालि त्रिपिटक का अध्ययन प्रारम्भ कर दिये कुछ ही दिनों के बाद रंगून शहर में चले गये। पुनः माण्डले जाकर वहां के म्यादौं महा विहार में रहने लगे और वहाँ के बहुत बड़े विद्वान जैसे ऊ केतु स्यादौ, मण्डले खमल स्यादौ

और नण्डले पद्दया सयोदौ इत्यादि विद्वानों के पास रहकर सम्पूर्ण पालि साहित्य और बौद्ध दर्शन का अध्ययन किये।

२२– **उपसम्पदा--** 'पदन्या' विहार में बहुत दिनों तक अध्ययन कार्य करने के बाद रामू ग्राम में आये। यहीं उनके चिर परिचित दायक श्री खिजारी बाबू की सहायता से सन् १९०३ ई० में माघ शुक्ल ९, दिन सोमवार को उनकी उपसम्पदा हुई। उनके उपज्जाय गुरु उनके खास चाचा ऊ चन्दिमा महास्थवीर थे। इनका नाम अब भिक्षु ऊ चन्द्रमणि रखा गया।

२३-- **कुशीनगर में पुनरागमन—** उपासम्पदा होने पर आप पुनः कुशीनगर में आये और मात्र दो वर्ष रहकर पुन; बर्मा लौट गये। वहां मौलमीन नगर के वैजयन्त महाविहार में वर्षावास किये। और त्रिपिटक के गन्थों को दुहराये। उसके बाद पुनः कुशीनगर वापस चले आये और तब से कुशीनगर में स्थाई रुप से निवास करने लगे और बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय जीवन के अन्तिम क्षण तक कार्य करते रहे।

२४-- **अन्य धर्मावलम्बियों के मिथ्या दृष्टि का विरोध-** स्वर्गीय भिक्षु चन्द्रमणि को कुशीनगर में हिन्दू जनता के असंख्य मिथ्या दृष्टियों का सामना करना पड़ा। जैसे - सर्व प्रथम कुशीनगर में एक कुँआ का निर्माण कराये, लेकिन उस कुएं की शादी (विवाह) नहीं कराये। इसे स्थानीय जनता

इस पर कुपित हो गयी। बहु विवाद खड़ा हो गया। लेकिन भिक्षु चन्द्रमणि सत्य पर खड़े रहें उन्होंने साफ कह दिया कि निर्जीव कुएँ की शादी करना मूर्खता है। जब यहाँ के जिज्ञासु और श्रधालु शिष्यों को भिक्षु बनाये तब भी लोगों ने इनका विरोध किया। अन्त में सत्य की विजय हुई। विरोधी नतमस्तक हो गये।

२५– **कुशीनगर के महापरिनिर्वाण मन्दिर पर बौद्धों का अधिकार दिलाना :–** यों सन् १८७६ ई० में निर्वाण मुद्रा में तथागत की मूर्ति प्राप्त हो गयी थी और उसको एक छोटा सामन्दिर बनाकर सुरक्षित कर दिया था। लेकिन उसका रख–रखाव पूजा पाठ वहाँ के ब्रह्मणों के हाथ में था। भिक्षु चन्द्रमणि जी भारत से इग्लैण्ड तक पत्र व्यवहार कर के स्वयं जाकर समस्या का समाधान करवा दिये। सन् १९०४ ई० में मन्दिर बौद्धो के अधिकार में हो गया।

२६– **निर्माण कार्य :–** सन् १९०२ में कुशीनगर में निर्वाण धर्मशाला सन् १९१० ई० में सारनाथ का बर्मी धर्मशाला सन् १९२६ ई० में महानिर्वाण स्तूप कुशीनगर, सन १९२८ ई०में कुशीनगर का माथाकुवार मन्दिर, सन १९३६ में कुशी-नगर का सीमा मन्दिर का निर्माण सन १९२९ में श्री चन्द्रमणि निःशुल्क पाठशाला इत्यादि बनवाये तथा श्रावस्थी

का बर्मी बौद्ध विहार, लुम्बिनी का बुद्ध विहार; बलरामपुर का बौद्ध धर्मशाला, महावीर जूनियर हाईस्कूल, कुशीनगर बनवाने में काफी सहयोग किये। इसके अतिरिक्त कुशीनगर में आरकानी धर्मशाला और बसही कुटी इत्यादि महत्वपूर्ण भवनों का निर्माण कराया।

२७– **शिक्षा सेवा :–** आप सन १९२९ में श्रीलंका के शिष्य श्रद्धानन्द की सहायता से चन्द्रमणि निःशुल्क प्रा० पाठशाला खुलवायें १९३४ ई० में महापरिनिर्वाण धर्मशालायें, बुद्ध हाईस्कूल का शुरुवात किया। वह हाईस्कूल आगे चलकर बुद्ध इण्टर कालेज तथा बुद्ध स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हो गया। सन १९३६ ई० में महापरिनिर्वाण संस्कृत पाठशाला सुरु किया। वह पाठशाला आज कल कसिया के शिव मन्दिर पर चल रहा है। १९४४ ई० महा वीर जूनियर हाई स्कूल स्थापित किया। इसी तरह कुशी–नगर के आप पास के ग्रामीण जनता को शिक्षित बनायें।

२८– **परोपकार –** श्री चन्द्रमणि जी जब तक कुशीनगर में रहे नित्य सैकड़ों रोगियों की चिकित्सा किया करते थे। दवा के लिए ३—४ सेवक हमेशा दवा बनाने में लगे रहते थे। देश—विदेश के असंख्य विद्यार्थी और भिक्षुओं का उपासक उपासिकाओं को पालि, संस्कृत और ज्योतिष विद्या का अध्यापन किये और वे अपने-अपने विद्या में पारङ्गत होकर

अपने देश गये। वे अनाथों के सेवा जीवन के अन्तिम क्षण तक करते रहें। कुशीनगर से अछ्तों के लिए तमाम कुओं बनवा कर दिये थे। यात्रिओं की सेवा उनका मुख्य उद्देश्य था।

२९– **ग्रन्थ रचना** — सन् १९०९ ई० में 'धम्मपद' को हिन्दी में अनुबाद किये। "मंगल सुत्त" को देवनागरी लिपि में लिखे। भगवान बुद्ध का जीवन चरित्र हिन्दी में लिखे। रम्भा शुक संवाद को बर्मी भाषा में अनुवाद किये। "स्वरोदय" नामक ग्रन्थ को बर्मी भाषा में अनुवाद किये।

को भी बर्मी भाषा में अनुवाद किये। "महासति पट्ठान सुत्त; विरबल विनोद को बर्मी भाषा में अनुवाद किये। "धम्म चक्क पवत्तन सुत्तं; अनन्त लखण सुत्त, संगीति सुत्त सिगालो वाद सुत्त, वसल सुत्त, महापरिनिव्बान सुत्तं इत्यादि ग्रन्थों को हिन्दी अनुवाद किया।

३०- **धर्म प्रचार भारत में** —कुशीनगर के आस पास के लोगों को बौद्ध दीक्षा देकर भिक्षु बनाया। जैसे–भिक्षु अच्युतानन्द, भिक्षु धर्म रक्षित; भिक्षु जिनानन्द; भिक्षु प्रज्ञावंश, इत्यादि। भिक्षु सत्यानन्द; भिक्षु बिजयानन्द, भिक्षु संघरक्षित, भिक्षु विसुद्धानन्द, भिक्षु ञरसंबोधि। बर्मा, लंका, थाईलैण्ड, जापान, चीन, मंगोलिया; तिब्बत के भी इनके बहुत से शिष्य हैं। इसके अतिरिक्त राहुल सांकृत्यायन, भिक्षु जगदीश

काश्यप, भिक्षु आनन्द कौसल्यायन इत्यादि के प्रेरक यही थे।

३१- बोधिसत्व डा० भीमराव अम्बेडकर को बौद्ध दीक्षा — सन् १९५४ ई० में बर्मा के छठ संगीति समारोह में जाते समय बाबा साहब से भेंट बर्मा में हुई। इनका प्रवचन से संतुष्ट होकर भारतीय सम्बिधान के रचयिता बोधिसत्व डा० भीमराव अम्बेडकर ने अपना ५ लाख से अधिक अनुयायियों के साथ १४ अक्टुबर; सन् १९५६ ई० में दीक्षा लिया।

३२- नेपाल में थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार – भिक्षु चन्द्रमणि जी सन् १९४४ ई० में थेरवाद बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए नेपाल गये। वहाँ इनको नेपाल सरकार के भय से छीप–छीप कर बहुत दिनों तक संगठन करनो पड़ा। कुछ ही दिनों में तमाम उपासक और उपासिकाओं को थेरवाद बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए बर्मा, लंका भी भेजे। वहां पर 'धर्मोदय' सभा की स्थापना भी इन्होंने किया। इनके प्रभाव से बहुत से लोग उपासम्पदा ग्रहण किये। नेपाल के थेरवाद बुद्धशासन के सभी भिक्षु–अनागारिका इनके शिष्य–शिष्यायें हैं।

३३- कुशीनगर में स्वर्गवास — भिक्षु चन्द्रमणि जी ८ मई सन १९७२ ई० को प्रातः ९ बज कर ४५ मिनट पर कुशीनगर के सीमा मन्दिर में ही इस क्षण भंगुर शरीर से अपना

नाता तोड़ दिये ।

३४- कुशीनगर में चन्द्रमणि स्मारक —

"पूजा च पूजनीयान एनं मंगल मुत्तमं ।'

तथागत के द्वारा ३८ महा मंगल बताये गये हैं, इसमें पूजनीय प्राणियों कीपूजा एवं उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करना एक उत्तम मंगल कार्य है । हम सभी गुरुजी के ऋणि और उपकृत है । कुशीनगर में उनका अधिकांश जीवन बिता था । कुशीनगर उनको बहुत प्रिय था । अतः इसी भावना से प्रेरित होकर उनकी समाधि बनाई गयी है तथा वहीं उनकी पत्थर की प्रतिमा की स्थापित किया जा रहा है । ताकि उनका स्मरण सदा की स्थापित किया जा रहा है । ताकि उनका स्मरण सदा बना रहे । कुशीनगर में आने वाले उपासकों को उनका दर्शन होता रहे और उनसे प्रेरणा लेते रहें ।

सब्बे भवन्तु सुखिनो

समाप्त

पंचसील

ओकास द्वारत्तयेन कतं सब्बं अपराधं खमथ मे भन्ते ।
ओकास द्वारत्तयेन कतं सब्बं अपराधं खमथ मे भन्ते ।
ओकास द्वारत्तयेन कतं सब्बं अपराधं खमथ मे भन्ते ।
अहं भन्ते, तिसरणेन सह पञ्चसीलं धम्मं याचामि
अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ में भन्ते ।

दुतियम्पि अहं भन्ते तिसरणेन सह पञ्चसीलं
धम्मं याचामि अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे भन्ते ।
ततियम्पि अहं भन्ते, तिसरणेन सह पञ्चसीलं
धम्मं याचामि अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे भन्ते ।
आम भन्ते

नमो तस्य भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्य ।
नमो तस्य भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्य ।
नमो तस्य भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्य ।

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि

दुतियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि
दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि
दुतियम्पि संघं सरणं गच्छामि

ततियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि
ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि
ततियम्पि संघं सरणं गच्छामि

१) पाणातिपाता वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।
२) अदिन्नादाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।
३) कामेसु मिच्छाचारा वेरमणि सिक्खापदं समादियामि
४) मुसावादा वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।
५) सुरामेरय मज्जपमादट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि

अट्ठङ्ग उपोसथ सील

ओकास द्वारत्तयेन कतं सब्बं अपराधं खमथ मे भन्ते ।

३ बार

अहं भन्ते, तिसरणेन सह अट्ठङ्ग सम्मन्नागतं उपोसथ सीलं धम्मं याचामि अनुग्गहं कत्वासीलं देथ मे भन्ते ।

दुतियम्पि ... ... ततियम्पि ... ...

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स ।

३ बार

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि

दुतियम्पि ... ... ततियम्पि ... ...

१) पाणातिपाता वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

२) अदिन्नादाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

३) अब्रम्हचरिया वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

४) मुसावादा वैरमणि सिक्खापदं समादियादि

५) सुरामेरय मज्ज पमादट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि

६) विकाल भोजना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

७) नच्च गीत वादित विसुक दस्सन माला गन्ध विलेपन धारण मण्डन विभूसणट्ठाना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

८) उच्चासयन महासयना वेरमणि सिक्खापदं समादियामि ।

९) मेत्तसहगतेन चेतसा सब्बपाणाभुतेसु फरित्वा विहरणं समाधियामि (नवङ्गशील के लिए)]

तिरतन बन्दना

बुद्ध वन्दना

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

इति पि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो बिज्जा चरण सम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिस दम्म सारथी सत्था देव मनुस्सानं बुद्धो भगवाति ।

नमो तस्स सम्मासम्बुद्धस्स ।

ये च बुद्धा अतीता च, ये च बुद्धा अनागता ।
पच्चुप्पन्ना च ये बुद्धा, अहं वन्दामि सब्बदा ।।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं, बुद्धो सरणं वरं ।
एतेत सच्च वज्जेन, होतु मे जय—मङ्गलं ।

उत्तमङ्गेन वन्देहं पाद-पंसु वरूत्तमं ।
बुद्धेयो खलितो दोसो, बुद्धो खमतु तं ममं ॥
बुद्धं जीवित परियन्तं सरणं गच्छामि ।

धर्म-वन्दना

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको, अकालिको एहिपस्सिको, ओपनयिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञू ही'ति ।

नमो तस्स निय्यानिकस्स धम्मस्स ।

ये च धम्मा अतीता च ये च धम्मा अनागता ।
पच्चुप्पन्ना च ये धम्मा, अहं वन्दामि सब्बदा ॥
नत्थि मे सरणं अञ्ञं, धम्मो मे सरणं वरं ।
एतेन सच्च वज्जेन, होतु में जय-मङ्गलं ॥
उत्तमङ्गेन वन्देहं, धम्मञ्च दुविधं वरं ।
धम्मे यो खलितो दोसो, धम्मो खमतु तं ममं ॥

धम्मं जोवितपरियन्तं सरणं गच्छामि ।

सङ्घ-वन्दना

सुपटिपन्नो भगवतो सावक संघो उजुपटिपन्नो भगवतो सावक संघो, ञायपटिपन्नो भगवतो सावक संघो; सामीचिपटिपन्नो भगवतो सावक संघो यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिस पुग्गला, एस भगवतो सावक संघो, आहुनेय्यो; पाहुनेय्यो, दक्खि-

नेय्यो, अञ्जलि करणीयो; अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।

नमो तस्स अट्ठारिय पुग्गल महासंघस्स।

ये च संघा अतीता च, ये च संघा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये संघा, अहं वन्दामि सब्बदा॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, संघो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन, होतु मे जय—मङ्गलं॥

उत्तमङ्गेन वन्देहं, संघञ्च तिविधुत्तमं।
संघे यो खलितो दोसो, संघो खमतु तं ममं॥

संघं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि।

नीर—पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते! पानीयं उपनामितं।
अनुकम्पं उपादाय, पटिगण्हातु उत्तमं॥

पुष्प—पूजा

वण्ण गन्ध गुणोपेतं, एतं कुसुम सन्ततिं।
पूजयामि मुनिन्दस्स, सिरिपाद—सरोरुहे॥

पूजेमि बुद्धं कुसुमेन नेन, पुञ्ञेन मेतेन च होतु मोक्खं।
पुप्फं मिलायाति यथा इदम्मे कायो तथायाति विनास भावं॥

धूप—पूजा

गन्धसम्भार युत्तेन, धूपेनाहं, सुगन्धिना।
पूजये पूजनेय्यानं पूजाभाजनमुत्तमं॥

प्रदीप—पूजा

घन सारपदित्तेन, दीपेन तम धंसिना।

तिलोकदीपं सम्बुद्धं, पूजयामि तमोनुदं ॥

भोजन–पूजा

अभिवासेतु नो भन्ते ! भोजनं उपनामितं ।
अनुकम्प उपादाय, पटिगण्हातु मुत्तमं ।

व्यञ्जन–पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते ! व्यञ्जनं उपनामित ।
अनुकम्पं उपादाय पटिगण्हातु मुत्तमं ॥

फल–मूल–पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते ! खज्जकं उपनामितं ।
अनुकम्पं उपादाय, पटिग्हातु मुत्तमं ॥

त्रिचैत्य–वन्दना

वन्दामि चेतियं सब्बं, सब्बठानेसु पतिट्ठितं ।
सारीरिक धातु महाबोधिं; बुद्धरुपं सकलं सदा ॥

क्षमा–याचना

कायेन वाचा चित्तेन; पमादेन मया कतं ।
अच्चयंखम मे भन्ते, भूरि–पञ्ञो तथागत ॥

प्रार्थना

इमाय बुद्ध पूजाय कताय सुद्ध चेतसा ।
चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो लोको होतु सुखी सदा ॥
इमाय बुद्ध–पूजाय, यं पुञ्ञं पसुतं मया ।
सब्बं तं अनुमोदित्वा सब्बे 'पि तुट्ठ–मानसा ॥

दीवा–पूजाम्‌ जक ब्वनेगु

पूरेत्था दान—सीलादि, सब्बा 'पि दसपारमी ।
पत्वा यथिच्छितं बोधिं, फुस्सन्तु अमतं पदं ।।
इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि ।
इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया धम्मं पूजेमि ।।
इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया सङ्घं पूजेमि ।
अद्धा इमाय पटिपत्तिया जाति जरा व्याधि
मरणम्हा परिमुच्चिस्सामि ।।
इमिना पुञ्ञ कम्मेन; मा मे बाल समागमो ।
सतं समागमो होतु; याव निब्बान पत्तिया ।।
इदम्मे पुञ्ञ आसवक्खया वह होतु !
इदम्मे पुञ्ञ निब्बानस्स पच्चयो होतु !
इदम्मे पुञ्ञ सब्बे सत्ता सुखिता भवन्तु ! १

पुण्यानुमोदन

इदं वो ञातीनं होतु; सुखिता होन्तु ञातयो ३ बार

एत्तावता च अम्हेहि; सम्मतं पुञ्ञसम्पद
सब्बे देवानुमोदन्तु; सब्बसम्पत्ति—सिद्धिया
एत्तावता च अम्हेहि; सम्मत पुञ्ञसम्पदं।
सब्बे सत्तानुमोदन्तु सब्बसम्पत्ति—सिद्धिया
एत्तावता च अम्हेहि; सम्मतं पुञ्ञसम्पद
सब्बे भूतानुमोदन्तु; सब्बसम्पत्ति—सिद्धिया

साधु! साधु!! साधु!!!

समाप्त